अपनी भाषा

रचनाकार :- मैथिलीशरण गुप्त

गतिविधि:-

छात्र ऐसे शब्द ढूँढेंगे जिनमें एक मात्रा के कारण परिवर्तन हो जाता है| जैसे:- चिंता-चिता, दिन-दीन इत्यादि | इस गतिविधि का अनुभव कथन छात्र करेंगे |

प्रस्तावना :-

बच्चों कैसा था आपका अनुभव ? क्या बिना कुछ कहे रहना संभव है? क्या आप बता सकतें हैं कि भाषा हमारे लिए क्यों जरूरी है? जरा सोचिए इस जरूरी वस्तु का उपयोग हम किस प्रकार करते हैं |

बच्चों, क्या आप भाषा की कहानी सुनना चाहोगे?

भारतीय भाषाओं की कहानी:-

हमारी यह कहानी सिर्फ भारत के मौखिक भाषा के बारे में ....

मानव पहले सिर्फ इशारों में बोलता था ... इशारों ने ध्वनियों का रूप ले लिया .... ध्वनियों ने स्वर और व्यंजनों का रूप ले लिया.... और फिर निर्माण हुई वह भाषा जो वेदों की भाषा थी | इस भाषा को वैदिक संस्कृत कहा जाने लगा... व्याकरण के नियमों के कारण इसी भाषा ने अभिजात संस्कृत का रूप ले लिया ...... इन व्याकरण के नियमों के कारण सामान्य लोगों ने जो भाषाएँ अपने बोलचाल में अपनाई वे भाषाएँ थीं प्राकृत और अपभ्रंश

अपभ्रंश - आधुनिक भाषाएं

शौरसेनी - पश्चिमी हिंदी, राजस्थानी, पहाड़ी , गुजराती

पैशाची - लहंदा, पंजाबी

ब्राचड - सिंधी

महाराष्ट्री - मराठी

मगधी - बिहारी, बंगला, उडिया, असमिया

बच्चों इस प्रकार हमारी भाषाओं का निर्माण हुआ |

हिन्दी भाषा की बोलियाँ

पश्चिमी हिंदी - खड़ी बोली या कौरवी, ब्रिज, हरियाणवी, बुन्देल, कन्नौजी

पूर्वी हिंदी - अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी

राजस्थानी - पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी) पूर्वी राजस्थानी

पहाड़ी - पश्चिमी पहाड़ी, मध्यवर्ती पहाड़ी (कुमाऊंनी-गढ़वाली)

बिहारी - भोजपुरी, मागधी, मैथिली

हिन्दी के इतने सारे रूप हैं, आपने भी अपने पाठ्य-पुस्तकों में प्राचीन-हिन्दी साहित्य में ब्रज भाषा और अवधि भाषा के काव्यों को आवश्य पढ़ा होगा | लेकिन जिस हिन्दी का प्रयोग हम भारत की राष्ट्र-भाषा के रूप में करते हैं वह है खड़ी-बोली हिन्दी !

बच्चों आज की कविता हमें भाषा का महत्व बताती है |यह कविता किसी भाषा विशेष के बारे में नहीं है अपितु सभी भाषाओं को समर्पित है | इस कविता के कवि खड़ी-बोली हिन्दी के प्रख्यात कवि हैं | जिन्हें महात्मा गाँधी जी ने "राष्ट्र-कवि" की उपाधि दी थी |

"मैथिलीशरण गुप्त"

कवि का परिचय:-

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त (३ अगस्त १८८६ – १२ दिसम्बर १९६४) हिन्दी के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। श्री पं महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा से आपने खड़ी बोली को अपनी रचनाओं का माध्यम बनाया और अपनी कविता के द्वारा खड़ी बोली को एक काव्य-भाषा के रूप में निर्मित करने में अथक प्रयास किया और इस तरह ब्रजभाषा जैसी समृद्ध काव्य-भाषा को छोड़कर समय और संदर्भों के अनुकूल होने के कारण नये कवियों ने इसे ही अपनी काव्य-अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। हिन्दी कविता के इतिहास में गुप्त जी का यह सबसे बड़ा योगदान है। पवित्रता, नैतिकता और परंपरागत मानवीय सम्बन्धों की रक्षा गुप्त जी के काव्य के प्रथम गुण हैं, जो पंचवटी से लेकर जयद्रथ वध, यशोधरा और साकेत तक में हमें महसूस हो

सकते हैं। मैथिलीशरण गुप्त खड़ी-बोली हिन्दी के प्रख्यात कवि हैं, उनकी भाषा की शुध्दता और स्पष्टता पाठक को प्रभावित किए बिना नहीं रह सकती है |

साकेत उनकी रचना का सर्वोच्च शिखर है। अपनी लेखनी के माध्यम से वह सदा अमर रहेंगे और आने वाली सदियों में नए कवियों के लिए प्रेरणा का स्रोत होंगे।

कविता:-

करो अपनी भाषा पर प्यार
जिसके बिना मूक रहते तुम,रुकते सब व्यवहार||
जिसमें पुत्र पिता कहता है, पत्नी प्राणाधार,
और प्रकट करते हो जिसमें तुम निज निखिल विचार |
बढाओ बस उसका विस्तार |
करो अपनी भाषा पर प्यार ||
भाषा बिना व्यर्थ ही जाता ईश्वरीय भी ज्ञान,
सब दानों से बहुत बड़ा है ईश्वर का यह दान ||
असंख्यक हैं इसके उपकार |
करो अपनी भाषा पर प्यार ||
यही पूर्वजों का देती है तुमको ज्ञानप्रसाद,
और तुम्हारे भी भविष्य को देगी शुभ संवाद |
बनाओ इसे गले का हार |
करो अपनी भाषा पर प्यार ||

अनुच्छेद १:-

करो अपनी भाषा पर प्यार
जिसके बिना मूक रहते तुम,रुकते सब व्यवहार||

जिसमें पुत्र पिता कहता है, पत्नी प्राणाधार,

और प्रकट करते हो जिसमें तुम निज निखिल विचार |

बढाओ बस उसका विस्तार |

करो अपनी भाषा पर प्यार ||

अर्थ:- प्रस्तुत कविता में कवि हमें अपनी भाषा से प्यार करने का आग्रह करते हैं |

सोचो अगर भाषा न हो तो हमारी अवस्था कितनी बिकट हो जाएगी | हमारे व्यवहार ही ठप्प हो जाएँगे | हर छोटी से छोटी बात को व्यक्त करने के लिए हमें इशारों का सहारा लेना पड़ेगा | और अगर कोई व्यक्ति हमारे इशारों का अर्थ नहीं समझ पाया तो अनर्थ ही होगा |

क्या आप के साथ ऐसा कभी हुआ है कि आप किसी और प्रांत में गए हों जहाँ की भाषा आप नहीं जानते, ऐसे समय में अपनी बातों को लोगों तक पहुंचाना कितना कठिन हुआ होगा | सोचिए अगर आपको यही अनुभव रोजमर्रा के जीवन में आने लगे तो जीना कितना मुश्किल हो जाएगा |

यहाँ कवि और एक बात कहते हैं, कवि के अनुसार भाषा ही हमें हमारी पहचान देती है | किसी आदमी को उसका बेटा पिता कहकर बुलाता है और उसकी पत्नी उसे प्राणाधार कहती है | व्यक्ति एक ही होता है पर सभी से अलग-अलग रिश्तों में बंधा होता है .... सोचो अगर इन रिश्तों के नाम नहीं होते तो क्या होता? यह सचमुच सोचने वाली बात है कि अगर हमारे भी नाम नहीं होते तो क्या होता? लोग हमें किस नाम से बुलाते? और हमें यह कैसे समझ आता कि हमें ही बुलाया जा रहा है?

क्या आपको नहीं लगता कि भाषा हमारी उलझनों को उलझने से पहले ही सुलझा देती है|

इसी कारण कवि कहते हैं कि हमें अपनी भाषा का विस्तार करना चाहिए | अर्थात हमें सदैव नवनवीन भाषा के उपयोगों को सीखना चाहिए | अपना शब्द-संग्रह बढाना चाहिए | भाषा की शुध्दता की ओर ध्यान देना चाहिए |और इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि हमारी भाषा मृत भाषा के समान न हो जाएँ|

अनुच्छेद :२

भाषा बिना व्यर्थ ही जाता ईश्वरीय भी ज्ञान,

सब दानों से बहुत बड़ा है ईश्वर का यह दान ||

असंख्यक हैं इसके उपकार |

करो अपनी भाषा पर प्यार ||

अर्थ:- मानव को हमेशा से इस सृष्टि के विषय में कुतुहल रहा है | कुछ प्रश्नों के उत्तर वह अपनी बुध्दि के बल पर प्राप्त कर पाया | फिर भी ऐसे अनेक प्रश्न थे जो अनुत्तरित रह गए | तब मानव ने यह मान लिया कि कोई एक अदृश्य शक्ति है जो इस संसार का नियन्त्रण करती है | मानव ने इस अदृश्य शक्ति को ईश्वर का नाम दे दिया |

यह सारा ज्ञान या इस प्रकार विचार करने की क्षमता हम मानवों को भाषा के कारण ही मिल पाई है | यहाँ तक भाषा के ज्ञान को भी मानवों ने ईश्वर की देन माना |

क्या आपको लगता है कि पशु-पक्षी इस प्रकार का विचार कर पाते होंगे?

कवि इसी बात कीओर हमारा ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं | कवि कहते हैं कि अगर भाषा नहीं होती तो हमें यह ईश्वरीय ज्ञान की भी प्राप्ति नहीं हो पाती |कवि के अनुसार ईश्वर ने भाषा का एक बहुत बड़ा "दान" ही हम मानवों को दिया है |

इसी कारण हमारे आदि-ग्रन्थ "ऋग्वेद" में भी जिन ऋषियों ने सूक्त (ऋग्वेद में लिखे गए काव्य को सूक्त कहते हैं) उन्हें "द्रष्टा " कहा गया है | अर्थात ऐसा माना जाता है कि ईश्वर ने ही उन्हें काव्य बताए या उन्हों ने यह काव्य देखें ... अतः "द्रष्टा " ......

हम भारतीय हमेशा से ही यह मानते आएँ हैं कि जो भी हम करते हैं या जो भी ज्ञान हमें प्राप्त होता है वह ईश्वरीय कृपा के कारण होता है |

कवि मैथिलीशरण गुप्त भी यहाँ पर भाषा को ईश्वर की देन मानते हैं | वे कहते हैं कि ईश्वर ने अन्य प्राणियों को नहीं अपितु सिर्फ मानव को ही भाषा बोलने तथा लिखने का वरदान दिया है| और इसी ईश्वरीय देन के कारण ज्ञान का विस्तृत भंडार हम मानवों के लिए खुल गया | आज हम विचार कर पाते हैं या कल्पना कर पाते हैं क्योंकि हमारी भाषा विकसित है |

कवि कहते हैं कि हमें ईश्वर का भाषा रूपी देन के लिए सदैव ऋणी रहना चाहिए | यह ईश्वर क्र हम पर अनंत उपकार हैं |

अनुच्छेद : ३

यही पूर्वजों का देती है तुमको ज्ञानप्रसाद,

और तुम्हारे भी भविष्य को देगी शुभ संवाद |

बनाओ इसे गले का हार |

करो अपनी भाषा पर प्यार ||

अर्थ:- कवि कहते हैं कि जिस प्रकार भाषा ही ज्ञान के निर्माण का साधन है, उसी प्रकार भाषा ही भूतकाल को वर्तमानकाल से और वर्तमानकाल को भविष्यकाल से जोड़ने का काम करती है| हमारे पूर्वजों ने क्या किया उनके ज्ञान के बारे में उनके विचारों के बारे में हमें भाषा के जरिए ही पता चलता है |

उदाहरण के लिए सोचे कि शिवाजी महाराज के बारे में हमें किस प्रकार पता चला? उनके द्वारा लिख गए लिखित दस्तावेजों से और लोग जो उनके बारे में कहानियाँ बताते हैं उसके जरिए........ अर्थात मौखिक और लिखित दोनों माध्यामों से .... सोचो अगर इनमें से कोई माध्यम नहीं होता तो क्या हम शिवाजी के बारे में जान पाते?

भाषा के निर्माण तथा विकास के कारण ही आज हम पुराने साहित्य को पढ़ पाते हैं, उसने जीवन के बारे में जान पाते हैं |

उसी प्रकार भाषा के कारण ही आने वाल समय सुहावना बन सकता है |

“ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय, औरन को शीतल करे आपहुं शीतल होय | ”

अगर हमारी भाषा सुंदर है, सुनने वाले को सुख देने वाली है तो निश्चत ही हमारा भविष्य सुनहरा है | ऐसा कहा जाता है कि जी घाव तलवार से होते हैं,वे भर सकते हैं पर शब्दों के कारण जो घाव होते हैं वे भर नहीं सकते हैं | इसी करण हमें शब्दों का भाषा का इस्तमाल बड़े सोच विचार से करना चाहे |

इसी करण कवि कहतें हैं कि भाषा हमारे गले का हार बननी चाहिए | हमारे व्यक्तित्व की शोभा हमारी भाषा के कारण बढनी चाहिए |

आज तकनिकी प्रगति के कारण संपूर्ण दुनिया पास-पास आ गई है , भाषा भी बदल रही है | इस बदलते परिवेश में हमें भाषा की शुध्दता की ओर ध्यान देना होगा|

बच्चों, भाषा हमारे अस्तित्व का प्रतीक होती है अतः भाषा हमारा स्वाभिमान बननी चाहिए |

उद्देश्य :

यह कविता मूलतः किसी भाषा विशेष के बारे में नहीं है | यह कविता छात्रों को भाषा से प्यार करने की तथा भाषा का सम्मान करने का सन्देश देती है |

यह भारत का सौभाग्य है कि भारत एक बहु-भाषिक देश है और यह हमारा परम सौभाग्य है कि हमें इन भाषाओं को सीखने का अवसर मिलता है | इसी कारण यह हमारा कर्तव्य ही जाता

है कि हम सभी भाषाओं का सम्मान करें | हर भाषा अपने विशेषताओं के कारण दूसरी भाषा से अलग होती है | इसी कारण कोई भाषा श्रेष्ठ या कनिष्ठ नहीं होती है |

अगर हमें कोई भाषा विशेष नहीं आती हो तो इसका मतलब हमें कीच नहीं आता ऐसा नहीं होता है | जरूरत है इस न्यूनगंड से स्वंय को आजाद रखने की |

बच्चों अगर हम भाषा की प्रकृति को समझे तो यह एक माँ के समान है, हमें उससे डरने की अपेक्षा उसे प्यार से आत्मसाद करना है |

भाषा सिर्फ जानना जरूरी नहीं होता भाषा का अच्छा उपयोग भी आना चाहिए | सुंदर शब्दों और वाक्यों से सजी भाषा हमेशा सबका मन मोह लेती है | आप ही सोचिए आपको किससे बात करना अच्छा लगता है ... प्यार से बात करने वाले व्यक्ति के साथ या हमेशा गालियाँ देने वाले व्यक्ति के साथ ....

यह कविता हमें भाषा का सम्मान करना सीखाती है |

पुष्टि-धन:-

बच्चों आप एक कहानी सुनना चाहोगे........

इजरायल देश से आप परिचित ही हैं जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद १९४८ में विश्व भर में फैले यहूदियों को एक स्थान पर बसाने के लिए बनाया गया। आज वहाँ की मुख्य राजभाषा हिब्रू है और सहयोगी भाषाएँ अँग्रेजी एवं अरबी हैं। अँग्रेजी और अरबी तो आज विश्व के अनेक देशों में बोली जाती हैं, पर हिब्रू ऐसी भाषा है जो दुनिया के नक़्शे से लगभग गायब ही हो गई थी। इसके बावजूद यदि आज वह जीवित है और एक देश की राजभाषा के प्रतिष्ठित पद पर आसीन है, तो इसके पीछे एक व्यक्ति का, केवल एक व्यक्ति का, विश्वास कीजिये केवल एक व्यक्ति का संकल्प है, संघर्ष है, जूनून है, स्वाभिमान के साथ जीने की अदम्य इच्छाशक्ति है। जानना चाहेंगे कि वह एक व्यक्ति कौन था, हिब्रू कैसे नष्ट हुई और उसने उसे अपने संकल्प के बल पर पुनर्जीवित कैसे किया ?

आधुनिक युग में जिस व्यक्ति के मन में इस भूली-बिसरी हिब्रू भाषा को पुनः जीवित करने की इच्छा जागी, उसका नाम था- **एलिज़र बेन यहूदा।** उसका जन्म १८५८ में एक सामान्य परिवार में लिथुवानिया (रूस) के एक गाँव में हुआ था। रूस में तब ज़ार का शासन था। यहूदी उसमें अपने को उपेक्षित अनुभव करते थे। अतः यहूदियों की अस्मिता को सम्मान दिलाने के लिए एक राष्ट्रव्यापी आन्दोलन शुरू हुआ, और बेन यहूदा भी उस आन्दोलन से जुड़ गया।

इन्हीं दिनों उसके मन में अपनी मूल भाषा हिब्रू के प्रति विशेष प्रेम जागा। बाइबिल में तो हिब्रू सुरक्षित थी ही और इसलिए सिनेगाग (यहूदी प्रार्थना भवन) में उसका प्रयोग होता ही था। बेन यहूदा ने हिब्रू को यहूदियों के आपसी संवाद की भाषा बनाने का विचार लोगों के सामने रखा, पर शुरू में लोगों ने उसके इस विचार का उपहास उड़ाया और कुछ लोगों ने तो उसे ' पागल' तक कह दिया। उन्हें लगता था कि यहूदी जिस भाषा को भूल चुके हैं, उसमें संवाद कैसे कर सकते हैं ! बाइबिल के जिस अंश में हिब्रू सुरक्षित थी, सामान्य यहूदी तो अब न उसका अर्थ समझते थे और न उसका ठीक से उच्चारण कर सकते थे, तो फिर उसके प्रयोग की बात कैसे सोच सकते थे ?

बेन यहूदा इन आलोचनाओं और प्रतिक्रियाओं से हताश नहीं हुआ, बल्कि इन आलोचनाओं ने उसकी इच्छा को "दृढ़ संकल्प" का रूप दे दिया जिसे साकार करने के लिए उसने जो प्रयास किए उन्हें अपनी सुविधा के लिए हम तीन वर्गों में बाँट सकते हैं- (१) घर में हिब्रू का प्रयोग (२) शिक्षा के माध्यम के रूप में हिब्रू का प्रयोग (३) विभिन्न आवश्यकताओं के लिए हिब्रू में नए शब्दों का निर्माण।

घर में हिब्रू के प्रयोग की शुरुआत उसने अपने घर से ही की, और इसे इतना विस्तार दे दिया कि जब भी वह किसी यहूदी से घर में या बाहर मिलता तो वार्तालाप में हिब्रू का ही प्रयोग करने का प्रयास करता। अपने इन प्रयासों के प्रति वह कितना गंभीर था, इसका अनुमान इन तथ्यों से लगाया जा सकता है कि जब उसके पहले बच्चे (बेटे) का जन्म हो चुका था और घर में कोई ऐसा व्यक्ति आता जो हिब्रू नहीं बोलता था, तो वह अपने बच्चे को दूसरे कमरे में भेज देता था ताकि बच्चे के कान में दूसरी भाषा का कोई शब्द तक न पड़े।

बेन यहूदा ने शब्द निर्माता, शब्दकोश निर्माता, शिक्षक, नेता - सभी प्रकार की भूमिकाएँ निभाईं। उसने आइस क्रीम, जेली, आमलेट, रूमाल, तौलिया, गुड़िया, ग्राहक, साइकिल, समाचार पत्र, सम्पादक, सैनिक आदि के लिए हिब्रू में शब्द बनाए। अपने बनाए शब्द वह अपने समाचार पत्र, हत्ज्वी में भी छापता था।

सन १९४८ में जब इजरायल राष्ट्र का उदय हुआ तो बेन यहूदा के संकल्प को एक नया आयाम मिल गया। उसका तो ६४ वर्ष की आयु में सन १९२२ में क्षयरोग से निधन हो चुका था, पर उसके सत्प्रयासों से जीवित की गई हिब्रू भाषा इजरायल की राजभाषा बन गई। ज़रा ध्यान दीजिए कि इजरायल को बने लगभग उतना ही समय बीता है जितना हमें स्वतंत्र हुए, पर यह

यहूदियों का स्वभाषा प्रेम और स्वाभिमान ही है जिसके बल पर वहाँ व्यापार, प्रशासन, शिक्षा, ज्ञान, विज्ञान, साहित्य, कला, राजनीति आदि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हिब्रू का ही प्रयोग हो रहा है। पूरे विश्व में यहूदियों की कुल संख्या लगभग एक करोड़ है, जिनमें से लगभग आधे अर्थात ५० लाख इजरायल में रहते हैं, पर हिब्रू भाषा केवल इजरायल में रहने वाले यहूदियों की नहीं, बल्कि पूरे विश्व में बिखरे सभी यहूदियों की भाषा बन चुकी है। यों तो हर यहूदी आज बहु- भाषाभाषी है, पर जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित साहित्य की रचना हिब्रू में करना गौरव की बात समझता है।

यह इस बात का प्रमाण है कि अगर अपनी भाषा के प्रति अनुराग हो, अपनी भाषा को लेकर स्वाभिमान का भाव हो तो ऐसी भाषा को भी "जीवित" किया जा सकता है जिसे दूसरे लोग "मृत" समझते हैं। उस भाषा को नया रूप दिया जा सकता है, समाज को नए संस्कार दिए जा सकते हैं और हर बाधा को पार किया जा सकता है। क्या हम भी अपनी भाषाओं के लिए इससे कुछ प्रेरणा लेंगे? हमारी भाषाएँ तो मृत नहीं, जीवित हैं। हमें तो केवल इन भाषाओं के प्रयोग करने का संकल्प लेना है। अपने स्वभाषा प्रेम और स्वाभिमान को जगाना है। बेन यहूदा का उदाहरण क्या हमारे मन में ऊर्जा का संचार नहीं करता ?

यह कहानी पढ़कर आपको कैसा लगा? क्या आप इससे पढने के बाद आपका अपनी भाषा के प्रति स्वाभिमान जागृत हुआ?

पशु-पक्षी आपस में किस प्रकार बातें करते होंगे?